दादीजी होती तो ऐसा करती, ऐसा कहती...

अगस्त महीना आते ही सभी के दिलों दिमाग पर दादीजी की यादें तरोताज़ा हो जाती हैं। इतने साल हो गये है दादीजी को अव्यक्त हुए लेकिन आज भी हर बार उनकी कमी का एहसास होता रहता है। प्रश्न उठता है कि हम किसी के साथ इतना दिल से कैसे जुड़ सकते हैं? यह हर ब्राह्मण आत्मा के दिल की बात है। ब्रह्मा बाबा और मम्मा की तरह जिसने भी दादीजी को देखा या सुना उस आत्मा ने अपना जुड़ाव दादीजी के साथ महसूस किया। पूरे कल्प में हमने किसी न किसी रूप में उनकी पालना ली है, उनके साथ सम्बन्ध निभाया है, समीपता का अनुभव किया है। जन्म-जन्मांतर के रिश्तों की यह रेशमी डोर पूरे ब्राह्मण परिवार को एक सूत्र में बांधे रखती है।

उमंग और उत्साह का पंख माना दादी प्रकाशमणि

दादीजी के साथ हम सब की जुड़ी हुई यादें दैहिक, भौतिक या लौकिक न होने से वह हमें सताती या दु:ख की लहर नही पैदा करती, ना ही हमारे पैरों की बेड़ी बन जाती है, अपितु वह हमें हिम्मत और हौसला देती है, खुले आसमान में उड़ने के लिए उमंग और उल्लास के पंख देती है। दादीजी की यादें प्रेरणाओं का ऐसा तूफान है जो हमें पुरुषार्थ की ऊँची मज़िल तक ले जाता है। उनका चेहरा नज़र के सामने आते ही पवित्रता और रुहानियत का अनुभव होने लगता है। उनकी रुहानी मुस्कान और चेहरे की दिव्यता को नज़रों में बसाकर किसी की भी आँखें बुराई में डूब नहीं सकतीं। उनके व्यक्तित्व की परछाई को अपने साथ महसूस करते हुए कोई गलत कर्म के बारे में सोच भी नहीं सकता। ऐसा चमत्कारी रुहानी व्यक्तित्व था दादीजी का।

संकल्पों से उड़ाया संस्थान् को ऊँची उड़ान

दादीजी के बारे में सोचते हुए एक बात प्रखरता से महसूस होती है कि अगर कोई व्यक्ति संकल्पों की उड़ान भरना चाहे तो उसकी सीमायें केवल आसमान ही हो सकती है। दादीजी ने यज्ञ की बागडोर को संभालते हुए यज्ञ और ब्राह्मण परिवार की उन्नति के संकल्पों की ऊँची ते ऊँची उड़ान भरी और उनके हर संकल्प के साथ यज्ञ, यज्ञ वत्स और सेवाओं में दिन दुनी और रात चौगुनी उन्नती का अनुभव किया। उनके स्वयं के पुरुषार्थ और स्थिति की बात हो, ब्राह्मण परिवार की उन्नति की बात हो, यज्ञ व्यवस्थापन, समर्पित भाई-बहनों की या फिर गृहस्थियों की बात हो उनके श्रेष्ठ और बेहद के संकल्पों के पारस-स्पर्श से सबका सोना हो गया।

दादीजी खुद एक संस्था थीं

प्रश्न यह उठता है कि हमारी सोच का दायरा कितना बड़ा हो सकता है? हम सभी हमेशा कहते हैं कि "Think globally & act locally" विश्व कल्याण के बारे में सोचते हुए अपने कर्म क्षेत्र पर वैसा ही कर्म करें। यह बात बिल्कुल सच है कि अगर हम विश्व के परिप्रेक्ष्य में सोचते हुए कोई भी कर्म करते हैं तो पहली बात तो कर्म प्रभावशाली होता है और उस कर्म से सारे विश्व की आत्माओं को लाभ पहुंचता है। विश्व महाराजन बनने वाली आत्माओं के हर कर्म के पीछे अक्सर पूरे विश्व के कल्याण की भावना समाई होती है। दादीजी के चरित्र के हर कर्म में यह अनुभव होता रहा कि यही विश्व महाराजन बनने वाली आत्मा के कर्म और लक्षण हैं। जब वे किसी एक व्यक्ति या संगठन को संबोधित करतीं तब उनके सामने न केवल वह व्यक्ति या संगठन होता बल्कि पूरे विश्व की आत्मायें इमर्ज होती, इसलिए आज भी उनके संकल्प और शब्दों का प्रभाव न केवल यज्ञ लेकिन पूरे विश्व में दिखाई देता है।

उनकी मधुर स्मृति आज भी सबके ज़हन में

सभी दादियों ने बाप-दादा से उनको मिली हुई पालना और पढ़ाई के वर्से को हम तक पहुंचाया और आज भी पहुंचा रही हैं। उन्होंने अपने जीवन से बाप-दादा के प्यार, पालना और पढ़ाई का सबूत दिया जिसका हम भी प्रखरता से अनुभव कर रहे हैं। उनके साथ रहते हुए हमने तो यह जान लिया कि ब्रह्मा बाबा ने इनको कैसी पालना दी होगी! परंतु अब हमारी बारी है दादियों से मिली पालना के वर्से को आगे बढ़ाने की। आज जो आत्माएं आ रही हैं, हो सकता है कि उन्होंने दादीजी को नहीं देखा हो, तो क्या वे हमारे व्यक्तित्व और व्यवहार से दादीजी की पालना का अनुभव कर सकते है?

दादियों का हर संकल्प, बोल और कर्म यज्ञ सेवा और यज्ञ रक्षा के प्रति समर्पित रहा, तो हमें भी अपने संकल्प, बोल और कर्म को उस ऊँचाई तक पहुंचाना होगा। अगर हम सच्चे दिल से दादीजी को याद कर उनका स्मृति दिवस मनाना चाहते हैं तो हर साल कम से कम दादीजी की एक योग्यता को अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा।

- ब्र.कु.कल्पना, राजयोग शिक्षिका, माउण्ट आबू।

शब्दों का प्रभाव पहुंचा अमेरिका

दादीजी 10 जून 1999 में अमेरिका के वॉशिंगटन डीसी शहर में गईं और नेशनल प्रेस क्लब के नेताओं के सामने शांति की शक्ति विषय पर अपने उद्गार व्यक्त किए। उन्हें राष्ट्रीय मेहमान बनने का सम्मान उस देश ने दिया और उस समय के मेयर एन्थनी विलीयम्स ने उस दिन को दादी प्रकाशमणि दिवस के रूप में मनाना घोषित किया। पिछले 15 सालों से 10 जून वॉशिंगटन शहर में "दादी प्रकाशमणि दिवस "के रूप में मनाया जाता है। यही है वास्तव में वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपनी सोच को पंख देना।

आज हममें से हरेक दादीजी की पालना और उनसे मिले हुए प्यार का वर्णन करते हुए थकता नहीं है लेकिन हमें अपने आप से यह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए कि हमने अपने जीवन और व्यवहार में उनके समान कितने गुणों को अपनाया है? हमारे आसपास रहने वाले लोग हमारे व्यवहार, बोल और कर्म से कितना परसेन्ट दादीजी की परछाया का अनुभव करते हैं?

राँची-झारखण्ड। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मला।

हरदोई-उ.प्र.। रक्षण प्रेक्षा ग्रह ऑडिटोरियम में आयोजित 'एक शाम प्रभु के नाम' कार्यक्रम में मारुती कार कॉन्सेप्ट ऑनर संजीव अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रोशनी व ब्र.कु. अविनाश।

ऋषिकेश। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् एम्स के डायरेक्टर डॉ. रामकुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आरती।

फर्रुखाबाद-वीवीगंज। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. गिरीजा, सदाकत हुसैन सेथली (इमाम), ब्र.कु. मंजू, जिला जज राजन चौधरी, उद्योगपति व भाजपा पार्टी महिला मोर्चा की कोषाध्यक्ष मिथलेश अग्रवाल, डॉ. अनीता सूद व एडवोकेट ब्र.कु. सुरेश गोयल।

दिल्ली-लाजपत नगर। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के समापन अवसर पर समूह चित्र में सर्वोदय विद्यालय की प्रिन्सीपल अल्का अग्रवाल, वाइस प्रिन्सीपल सुरक्षा बत्रा, ब्र.कु. चन्द्र, ब्र.कु. जया व प्रतिभागी बच्चे।

वोरीगुम्मा-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान तहसीलदार पंचानन पात्र को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु. शुषमा।